Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 37 • 17 जून - 23 जून, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 15-06-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

जैसे कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, इसी प्रकार पंडित पुरुष अपनी आत्मा को पापों से बचा अध्यात्म में ले जाए।
- आचार्य श्री भिक्षु

आदमी की वाणी रहे कल्याणी : आचार्यश्री महाश्रमण

मुख्य मुनि के नियुक्ति दिवस पर सबको मिला विकास और समाधि का आशीर्वाद

केलवद।
05 जून, 2024

भैक्षवगण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रसास्वाद करवाते हुए फरमाया कि शास्त्र की वाणियां शिक्षाप्रद रूप में प्राप्त होती है। प्राचीन शिक्षाएं जो शास्त्रीय भाषा में हैं, उनकी अपनी गरिमा होती है। आदमी के पास वाणी है, वह वाणी कल्याणी रहे, पाप ग्राहिका न बने, ऐसा यथासंभव प्रयास रखना वांछनीय है।

वाणी से आदमी सत्य या मृषा बोल सकता है। प्रिय या कटु भी बोल सकता है तो सामान्य वचन भी प्रयुक्त कर सकता है। इरादतन झूठ बोलना गलत बात होती है। विस्मृति या प्रमाद से ज्ञानी आदमी के मुख से भी स्खलना हो सकती है, पर मुनि उसका उपहास न करें। झूठ बोलने के पीछे अलग-अलग उद्देश्य हो सकते हैं। दूसरे को कष्ट न हो जाए, स्वयं का अहित न हो जाए या किसी का हित हो जाए इन कारणों से व्यक्ति झूठ बोल सकता है। कभी-किसी का अहित करने व फंसाने के लिए भी व्यक्ति झूठ बोल सकता है। इस प्रकार अनेक कारणों-संदर्भों से व्यक्ति मृषावाद का प्रयोग कर सकता है। शास्त्रकार ने कहा है कि साधु को हिंसाकारी झूठ नहीं बोलना चाहिए।

आचार्य प्रवर ने फ़रमाया- आज ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी है, मुख्यमुनि का नियुक्ति दिवस है। यह कोई संयोग ही है कि वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का मनोनयन दिवस, ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी को साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी का नियुक्ति दिवस और आज मुख्यमुनि महावीरकुमारजी का नियुक्ति दिवस है। मुख्य मुनि को नियुक्त हुए आठ वर्ष हो गए हैं। साध्वीप्रमुखा पद तो पहले से चला आ रहा है, बाद में नए-नए उन्मेष आए हैं। उनमें दो उन्मेष - साध्वीवर्या का पद सृजन और उसी बैठक में नियुक्ति, उसी प्रकार मुख्य मुनि का भी पद सृजन और उसी बैठक में नियुक्ति। उन्मेष बहुत उपयोगी रहें, और जीवन में नए-नए उन्मेष लाने में भी निमित्त बने। मुख्य मुनि भी खूब ज्ञान, दर्शन, चारित्र, स्वाध्याय, ध्यान, सेवा, कौशल सब का विकास होता रहे। साध्वीप्रमुखाजी का तो बड़ा दायित्व है ही, साध्वी समुदाय का, बाइयों का, समाज का दायित्व है।

(शेष पेज 3 पर)

आचार्यश्री तुलसी
28वां महाप्रयाण दिवस

आषाढ़ कृष्णा 03। 24 जून, 2024

सन् 1914 में कार्तिक शुक्ल दूज को चंदेरी (लाड़नूं) की धरती पर जन्म लेने वाले आचार्य तुलसी ने 11 वर्ष की उम्र में जैन भागवती दीक्षा स्वीकार कर जैन आगमों एवं भारतीय दर्शनों का गहन अध्ययन किया। अपने 11 वर्षीय मुनिकाल में 20 हजार पद्यों को कंठस्थ कर लेना, 16 वर्ष की उम्र में अध्यापन कौशल में पारंगत हो जाना, 22 वर्ष की उम्र में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म संघ के दायित्व की चादर ओढ़कर वर्षों तक उसे बखूबी निभाकर आपने गण का अथाह भंडार भरा है।

जीवन भर काम करूंगा, गण का भंडार भरूंगा ।
संकल्प अटूट निभाया रे, महाप्राण गुरुदेव ।।

श्रद्धावनत: अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

ध्यान अध्यात्म साधना का एक अंग है

शुद्ध, निर्मल विषय में एकाग्रता हो सकती है धर्म के अर्जन का कारण: आचार्यश्री महाश्रमण

राजूर।
07 जून, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि ध्यान अध्यात्म साधना का एक अंग है। ध्यान पाप कर्म बन्ध का भी एक साधन बन सकता है। ध्यान अर्थात चिन्तन। एक आलंबन पर मन को केंद्रित कर देना अथवा मन, वचन, काय की प्रवृत्तियों का निरोध करना ध्यान होता है। मन, वचन, काय की प्रवृत्तियों का निरोध तो आध्यात्मिक ध्यान है।

एकाग्रता अशुद्ध है तो अशुद्ध विषय से पाप का बन्ध हो सकता है। निर्मल विषय में एकाग्रता है तो वह धर्म लाभ वाला कार्य हो सकता है। शरीर में जो स्थान शीर्ष का है, वृक्ष में जो स्थान मूल का है, वही स्थान सर्व साधु धर्म में ध्यान का होता है।

जैन वांग्मय में ध्यान के चार प्रकार बताए गए हैं : आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान। आर्त्त-रौद्र अशुभ ध्यान है तो धर्म और शुक्ल ध्यान शुभ ध्यान हो जाते हैं।

हमारा मन गतिशील है, इसमें अनेक विचार आते रहते हैं। मन में दो कमियां है- चंचलता और मलिनता। वैसे मन विकास का द्योतक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही मन होता है। जिसके मन है वो ही धर्म की ज्यादा और ऊंची साधना कर सकता है तो पाप का बंध भी ज्यादा मन वाला प्राणी ही कर सकता है।

ध्यान की अनेक पद्धतियां चलती हैं, हमारे यहां प्रेक्षाध्यान पद्धति चलती है। प्रेक्षा अर्थात सिर्फ देखना, गहराई से, राग-द्वेष मुक्त हो देखना। दीर्घ श्वास का प्रयोग कर, विचारों को कम करने का प्रयास करें। हर क्रिया के साथ ध्यान को जोड़ा जा सकता है। भाव क्रिया रखें, समता भाव रखें।

कषायमुक्त रहते हुए अनासक्ति का भाव रखें। धर्म और ध्यान को हम जीवन शैली का अंग बनाने का प्रयास करें।

मनुष्य जीवन में पाप से बचें और धर्म का आचरण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

देवलगांव (गुजरी)।
09 जून, 2024

जन-जन का कल्याण करने वाले महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी ने महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र से खान्देश में मंगल प्रवेश किया। लगभग चौदह किलोमीटर का विहार कर आचार्यप्रवर अपनी धवल सेना के साथ जलगांव जिले के देवलगांव (गुजरी) के जिला पंचायत मराठी प्राथमिकशाला पधारे। महामनस्वी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारे आत्म हित के लिए ज्ञान का बहुत महत्त्व है। सद्ज्ञान, आत्म कल्याण का बोध प्राप्त हो जाये, जीवन कल्याण का बोध प्राप्त हो जाए और सम्यग्ज्ञान के अनुसार हमारा आचरण हो जाये तो हमारी आत्मा मुक्ति की दिशा में अग्रसर हो सकती है।

ज्ञान एक ऐसा तत्व है, जिससे करणीय और अकरणीय की जानकारी प्राप्त हो सकती है। धार्मिक ज्ञान में मन निमग्न हो जाता है उससे चेतना-आत्मा की शुद्धि भी हो सकती है। सत्संगत का महत्व बताया जाता है। साधु जो त्यागी है, सन्यास का जीवन स्वीकार कर लिया है, संसार से उपरत हो गया है, कंचन कामिनी के चक्र से मुक्त हो गया है वह एक त्यागी व्यक्ति हो सकता है।

संतों से सद्ज्ञान प्राप्त होता है। साधु की वाणी से कभी वैराग्य भाव भी जाग सकता है। व्यक्ति जन्म-मरण की परम्परा से अपने आप को मुक्त करने के लिए साधना का पथ स्वीकार करे। गृहस्थ जीवन भी अच्छा बने। जीवन में अहिंसा, संयम और नैतिकता का समावेश रहे। यह मानव जीवन बड़ा दुर्लभ बताया गया है। वीतराग प्रभु के प्रति हमारी भक्ति हो और प्राणीमात्र के प्रति दया-करुणा की भावना हो।

मनुष्य का जीवन सादा हो, विचार ऊंचे हो। सद्विचार-सदाचार जीवन में हो, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि अध्यात्म की साधना चले तो जीवन अच्छा बन सकता है। समय बीत रहा है, इसके प्रति जागरूक बनें। मनुष्य जीवन में पाप से बचना और धर्म करना इन दो बातों पर हम ध्यान देकर अच्छा आचरण करें, यह हमारे लिए कल्याणकारी हो सकता है।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच जोगेंद्र सिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ज्ञानी, भाग्यशाली और पुरुषार्थी व्यक्ति जीवन में बढ़ सकता है आगे: आचार्यश्री महाश्रमण

रोहिणखेड़।
08 जून, 2024

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी नलगंगा नदी के तट पर बसे रोहिणखेड़ ग्राम में पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि चौरासी लाख जीव योनियों में मनुष्य जन्म मिलना बहुत अच्छी और बड़ी बात हो सकती है। मनुष्य जन्म प्राप्त करने के बाद आदमी उसे किस प्रकार जीता है यह महत्वपूर्ण बात हो जाती है। एक आदमी पाप का, अधर्म का जीवन जीता है, तो मरकर नरक या तिर्यंच गति में पैदा हो जाता है। कुछ मनुष्य ऐसे भी हो सकते हैं, जो विशेष पाप या धर्म भी नहीं करते हैं और मरकर वे मनुष्य जन्म को प्राप्त हो जाते हैं। कई मनुष्य जो धर्म करते हैं, साधु बन जाते हैं, श्रावकत्व का अच्छा पालन करते हैं, तपस्या-निर्जरा करते हैं वे मरकर देवगति में या मोक्ष में भी चले जाते हैं।

मनुष्य से नरक या तिर्यंच गति में जाना पतन की बात हो जाती है। मनुष्य से मनुष्य बन जाना साधारण बात हो गयी, देवगति में जाए ये विशेष बात हो जाती है। मनुष्य जन्म से मोक्ष में चले जाना तो सर्वोत्तम बात होती है।

हम ध्यान दें कि हमारे जीवन का क्रम, आचरण व जीवन शैली कैसी है? अज्ञानी आदमी गलत मार्ग पर चलकर मूल पूंजी ही गंवा देता है। जीवन में भाग्य का सहयोग न हो तो जीवन में, विकास में अवरोध आ सकता है। पढ़ा-लिखा, भाग्यशाली और पुरुषार्थी जीवन में बहुत आगे बढ़ जाता है।

पिता को तो वो बेटा प्यारा होता है, जो अच्छी कमाई करके लाए। मनुष्य जन्म तो एक कमाई है। हम तीर्थंकर भगवान के बेटे हैं, हम ऐसा धर्म का जीवन जीएं ताकि हमें आगे सुगति प्राप्त हो सके। मनुष्य जन्म अनमोल है, जो हमें अभी प्राप्त है, इसका फायदा उठाने का प्रयास करना चाहिए।

हम धार्मिक साधना में समय लगाएं, व्यवहार में अहिंसा और संयम रहे। साधु बनना बड़ी बात है। साधु जीवन में निर्मलता-जागरुकता रहे। गृहस्थ श्रावक भी श्रावकत्व में और ध्यान दें। एक उम्र के बाद तो रोज सामायिक हो जाए, ऐसा प्रयास करें। धार्मिक साधना हमारी पूंजी को आगे बढ़ाने वाली बन सकती है।

जैन हैं या नहीं पर गुड मैन अवश्य बनें। जीवन में धार्मिकता के प्रति जागरूकता रखें।

मंगल प्रवचन के पश्चात नवजीवन विद्यालय के चेयरमैन रमेश नाना इंडोले ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी जी के महाप्रयाण दिवस पर विशेष

आचार्यश्री तुलसी ने इस धर्मसंघ का मानो कायाकल्प कर दिखाया

● मुनि कमल कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ एक प्रगतिशील और अनुशासित धर्मसंघ है। इस संघ के आदिकर्ता आचार्य भिक्षु हुए। जैन धर्म अनादिकाल से चल रहा है परन्तु तेरापंथ धर्मसंघ को जैन धर्म का नवीन संस्करण कहा जा सकता है। आचार्य भिक्षु ने देखा कि साधुओं में शिथिलाचार बढ़ रहा है, साधु-संत अपने-अपने चेले बनाने में लगे हुए हैं। साधुत्व की योग्यता के अभाव में बने हुए चेले से संख्या बल भले बढ़ जाये परंतु धर्म प्रभावना नहीं हो सकती। आचार्य भिक्षु ने धर्मक्रांति की और एक गुरु-एक विधान का निरूपण कर तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की। उस समय तेरह संत थे परंतु साध्वियां नहीं थी। लोग अक्सर मजाक किया करते थे कि भीखण जी! आपका लड्डु खांडा है? परंतु आचार्य भिक्षु उनकी मजाक से आहत नहीं हुए और धीरे-धीरे साध्वियां भी दीक्षित होने लगी। लोगों का स्वामीजी के प्रति आकर्षण भी बढ़ने लगा, श्रद्धालुओं की संख्या देखकर आचार्य भिक्षु ने साहित्य की भी रचना की। उनके मौलिक और उदात्त विचारों का ही प्रभाव था कि चन्द समय में मारवाड़, मेवाड़ में ही नहीं अन्य अनेक प्रांतों में तेरापंथ की महिला फैल गई। समय-समय पर युगानुकूल आचार्य आते रहे और संघ सुरक्षा के साथ प्रत्येक आचार्य ने अपनी सूझ बूझ से संघ की खूब श्रीवृद्धि की।

आचार्य श्री तुलसी इस संघ के नवमाचार्य थे। मात्र बाईस वर्ष की अवस्था में उन्हें अष्टामाचार्य कालूगणी अपना उत्तराधिकारी बनाकर देवलोक पधार गये। आचार्य श्री तुलसी ने इस धर्मसंघ का मानो कायाकल्प कर दिखाया। उन्होंने अपने दूरदर्शी चिन्तन से धर्मसंघ को अनेक नये-नये आयाम देकर संघ को प्राणवान बना दिया । आज यह धर्मसंघ जो विश्व विख्यात हुआ है, देश-विदेश के दिग्गज लोगों के आस्था का आधार बना है, उसमें आचार्यश्री तुलसी का नाम गौरव से स्मरण किया जाता है। आगम साहित्य, अणुव्रत साहित्य, प्रेक्षा साहित्य, कथा साहित्य, तत्वज्ञान साहित्य, इतिहास साहित्य, गद्य-पद्यमय साहित्य, मारवाड़ी, हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत अंग्रेजी में निबद्ध, प्रांजल भाषा में लिखे गये साहित्य को पढ़कर जैन-अजैन सभी अपनी जिज्ञासाओं के समाधान के साथ दृढ़ आस्था-शील बनते नजर आते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने अपने सुदुपदेशों से रूढ़िग्रस्त लोगों को भी सही मार्गदर्शन देकर उन्हें अहिंसा, संयम, तप के मार्ग पर गतिशील बनाया। घूंघट प्रथा, मृत्युभोज, छुआछूत जैसी अनेक कुप्रथाओं को मानो विराम ही लगा दिया। व्यक्ति-व्यक्ति के निर्माण के लिए कई संगठनों की शुरुआत हुई। युवक परिषद, महिला मंडल, किशोर मडंल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला जैसे उपक्रमों से जुड़कर प्रत्येक व्यक्ति माला के रुप में शामिल होने लगा। उनकी हर दृष्टि से सुरक्षा होने लगी, आज हमारे संघ में अनेकों वक्ता, लेखक, गायक, बुद्धिजीवी देखने-सुनने को मिलते हैं, यह सब गुरुदेव के किये गये सत्पुरुषार्थ का फल कहा जा सकता है। तेरापंथ समाज में महिलाओं का जो विकास हुआ है, वह अन्य लोगों के लिए प्रेरणा है। जो राजस्थानी महिलाएं घूंघट में रहती और अनपढ़ थी उनका जो आज हम वर्चस्व देखते और सुनते हैं तो हमें सात्विक गौरव की अनुभूति होती है। तेरापंथ की साध्वियां भी आचार्य श्री तुलसी से पूर्व चिन्तक, लेखक और वक्ता रूप में नहीं सुनी गयी थी, आज साध्वियां अपने कुशल प्रवचन, प्रांजल लेखन, सक्षम नेतृत्व से सबको मोहित कर लेती हैं।

आचार्यश्री तुलसी को देखें तो उन्होंने इससे बढ़कर अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात कर अन्य मतावलंबियों को भी अमन-चैन में रहने की कला सिखाई। अणुव्रत आन्दोलन से अनेक धर्मगुरु, राजनेता और उद्योगपति भी आपके भक्त बन गए थे। आचार्यश्री तुलसी केवल तेरापंथ और जैन धर्म के विकास से ऊपर उठकर मानवीय गुणों की सुरक्षा में लगे रहते इसीलिए वे राष्ट्रसंत ही नहीं विश्वसंत कहलाये। हम उनके महाप्रयाण दिवस पर मंगल कामना करते हैं कि उनके द्वारा चलाये गये हर आयाम निरंतर प्रवर्धमान रहें जिससे जन-जन के दिल-दिमाग में शांति और आनंद का वातावरण बना रहे और आचार्यश्री तुलसी का नाम भी अमर रहे।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आदमी की वाणी....

साध्वीवर्याजी पर समण श्रेणी, मुमुक्षु, सघन साधना शिविर, सुमंगल साधना आदि का दायित्व है। सबका स्वास्थ्य अच्छा रहे, विकास और सेवा का लक्ष्य रहे। चित्त में शांति, समाधि रहे। अपना जीवन भी शांतिमय रहे और दूसरों की सेवा का अच्छा लाभ उठाते रहे। मनोबल बढ़िया रहे। हम चारों में साध्वीप्रमुखा जी उम्र में बड़े हैं, दीक्षा पर्याय में मेरे से छोटे होते हैं पर जीवन पर्याय मेरे से ज्यादा है। आपका जीवन पर्याय और संयम पर्याय खूब आगे बढ़ता रहे। अध्ययन, स्वाध्याय, लेखन का विकास हो। सबका स्वास्थ्य, मनोबल बढ़िया रहे, जल्दी से डर-भय न हो, उच्चावट, उद्वेग, दुःख न हो, ऐसी साधना पुष्ट रहे। चतुर्दशी के उपलक्ष में पूज्यवर ने हाजरी का वचन कराते हुए ईर्या समिति, यातायात आदि के बारे में शिक्षाएं प्रदान करवायी। आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार मुनि योगेशकुमारजी ने यातायात नियमों की जानकारी दी। आचार्य प्रवर के सान्निध्य में मुनि निर्मलकुमारजी की स्मृति सभा आयोजित की गई। पूज्य प्रवर ने संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए चतुर्विध धर्म संघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री, मुख्यमुनिश्री, मुनि विश्रुतकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी एवं मुनि दिनेशकुमारजी ने भी उनकी आत्मा की उत्तरोत्तर प्रगति की मंगलकामना की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

गंगाशहर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर के निर्देशन में तेरापंथ कन्या मंडल गंगाशहर द्वारा 'मदरहुड विथ मदर्स' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन कन्या मंडल संयोजिका प्रिया संचेती व सहसंयोजिका मुदिता डाकलिया द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में 9 मां बेटी की जोड़ी ने भाग लिया जिसमें मां बेटी के तालमेल पर आधारित प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसका आयोजन तीन राउंड में किया गया और सबसे अधिक पॉइंट्स हासिल करने वाली मां बेटी की जोड़ी को 'बेस्ट मां बेटी जोड़ी' के टाइटल से सम्मानित किया गया। साथ ही 'बेस्ट जैन फूड मेकिंग कम्पटीशन' का आयोजन भी किया गया। जिसमें कुल 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आभार कन्या मंडल प्रभारी सीमा बोथरा ने किया।

बालोतरा

तेरापंथ महिला मंडल बालोतरा द्वारा साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में तप अनुमोदना कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंत्री रेखा बालड़ ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के संयम पर्याय के 50 वर्ष की संपन्नता पर दीक्षा कल्याण महोत्सव के अंतर्गत तप अनुमोदना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा ने आशादेवी गोलेच्छा की मासखमण, दीपिका सालेचा की पंद्रह और बाबूलाल देवता के नौ की तपस्या का उल्लेख करते हुए सभी तपस्वियों के तप की अनुमोदना की। महिला मंडल की बहनों द्वारा सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर साध्वी रतिप्रभा जी ने विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जीवन भर उपशम की साधना की है इसलिए उनका आभा मंडल अति पवित्र है। तपस्या से व्यक्ति अपने पूर्व संचित अशुभ कर्मों को नष्ट कर सकता है। आशादेवी गोलेच्छा ने मासखमण की तपस्या करके गोलेच्छा परिवार एवं महिला मंडल को भी गौरवान्वित किया।

साध्वी कलाप्रभाजी ने कहा कि तपस्या में अनंत शक्ति होती है जो तपस्या करता है उनका शरीर स्वस्थ व निरोग रहता है। साध्वी पावनयशाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी एक अमृत पुरुष हैं उन्होंने कोई विशेष तपस्या तो नहीं की है लेकिन गुरु और संयम के प्रति उनका समर्पण भाव अनूठा है। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मनोज्ञयशा जी ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

तेरापंथ महिला मंडल राजराजेश्वरी नगर, बेंगलुरू के तत्वावधान में कन्यामंडल द्वारा साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में 'एक्सप्लोर वन्स टैलेंट' शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें संपूर्ण बेंगलुरु की कन्या मंडल शाखाओं ने भाग लिया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी उदितयशा जी द्वारा किया गया। उन्होंने रोचक कहानी द्वारा लाइफ में बैलेंस बनाकर चलने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष सुमन पटवारी ने सभी का स्वागत किया। साध्वी संगीतप्रभा जी ने 'एक्सप्लोर योर टू टैलेंट' गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की।

साध्वी भव्ययशा जी ने एक चार्ट के माध्यम से कन्याओं को समझाया कि लाइफ में कितना टाइम किस चीज में यूज़ करना चाहिए। साध्वी संगीतप्रभा जी ने कन्याओं को यह प्रेरणा दी कि हमें पहले बड़े लक्ष्य को पूरा करना चाहिए।

साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने 'लीड योर सेल्फ' द्वारा खुद को जानने और समझने की प्रेरणा दी। सभी कन्याओं को सामायिक, डिजिटल त्याग, 24 तीर्थंकर प्रतियोगिता, डिबेट आदि के माध्यम से धार्मिक गतिविधियों से जुड़ने की प्रेरणा दी गई। डिबेट प्रतियोगिता के जज के रूप में प्रतिभा नाहर एवं प्रतिष्ठा प्रियदर्शिनी जैन ने अपना निर्णय दिया। जिसमें प्रथम स्थान पर विजयनगर कन्या मंडल, द्वितीय स्थान पर यशवंतपुर कन्या मंडल तथा तृतीय स्थान पर आर.आर. नगर कन्या मंडल रहा।

कार्यक्रम के अंत में कन्याओं ने शिविर के अपने अनुभव को साझा किया। कन्या मंडल प्रभारी पूनम दुगड़ ने संचालन एवं सहप्रभारी निशा छाजेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम की संयोजिका दिया छाजेड़ एवं सह-संयोजिका तृप्ति छाजेड़ के नेतृत्व में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर विविध आयोजन

शास्त्री नगर, दिल्ली

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव पर अभातेममं द्वारा निर्देशित 'महाश्रमणोस्तु मंगलम' कार्यक्रम मध्य दिल्ली महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन शास्त्री नगर में 'शासनश्री' साध्वी ललितप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा महाश्रमण अष्टकम का संगान किया गया। अध्यक्ष दीपिका छल्लाणी ने सभी का स्वागत किया एवं आचार्य प्रवर के जीवन के बारे में अपने विचार व्यक्त किया। मंत्री सुमन बरडिया ने अष्टगणी संपदा से सुशोभित आचार्य महाश्रमण जी की वाचना संपदा का सुंदर विवेचन कर गुरुदेव के 50वें दीक्षा कल्याणक पर अभ्यर्थना अर्पित की। 'आराधना आराध्य की' के अंतर्गत क्षेत्र के शांतिलाल सेठिया ने 8 की तपस्या कर गुरु चरणों में तप की भेंट अर्पित की। 'शासनश्री' साध्वी ललितप्रभा जी ने अष्टगणी संपदा को विस्तार से समझाया। कन्या मंडल और महिला मंडल ने गुरुदेव को गीतिकाओं के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का कुशल संयोजन चंचल सुराणा द्वारा किया गया।

शालीमार बाग, दिल्ली

आचार्यश्री महाश्रमण का दीक्षा कल्याण महोत्सव समारोह शालीमार बाग गोयल भवन में उत्तर मध्य महिला मंडल द्वारा 'शासनश्री' साध्वी रतनश्रीजी के सान्निध्य में समायोजित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतांजी ने कहा- आचार्य श्री महाश्रमण जी का आचार-विचार हिमालय से भी ऊंचा है। अध्यात्मनिष्ठा, संघनिष्ठा और आगमनिष्ठा अलौकिक है। आपने दो-दो आचार्यों का अनुशासन सहजता से सहन किया है, तभी बिन्दु से सिन्धु, लघु से महान बने हैं। आपमें आचार्य श्री तुलसी जैसी श्रमशीलता, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैसी गंभीरता और जयाचार्य जैसी स्थितप्रज्ञता है।

मैं दीक्षा कल्याण महोत्सव के पुण्य अवसर पर यही कामना करती हूं कि आपका देहरत्न निरामय रहे, आप युगों-युगों तक भैक्षव शासन को संरक्षण देते रहें। साध्वी चिन्तनप्रभाजी ने आचार्य अभिवंदना में अपने भावों को प्रस्तुत करते हुए कहा- आचार्यश्री महाश्रमण उदितोदित व्यक्तित्व के धनी हैं। इस कलिकाल में ऐसे तेजस्वी, यशस्वी, वर्चस्वी आचार्य को पाकर हम धन्यता कृत-पुण्यता की अनुभूति कर रहे हैं। आपने 12 वर्ष में दीक्षा, 24 वर्ष में साझपति, 36 वर्ष में युवाचार्य एवं 47 वें वर्ष में तेरापंथ के शीर्ष स्थान आचार्य पद को विभूषित किया। उत्तर मध्य महिला मंडल के मंगल गीत संगान के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मॉडल टाउन महिला मंडल ने आचार्य की आठ संपदाओं का विस्तृत विवेचन किया। आचार्य प्रवर द्वारा लिखित पुस्तक के आधार पर आयोजित प्रश्न मंच प्रतियोगिता के कार्यक्रम में 21 महिलाओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन सरोज छाजेड़ एवं इन्दिरा सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन भारती जैन ने किया।

कोटा

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में 'शासनश्री' साध्वी धनश्रीजी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाश्रमण जी का 63वां जन्मदिवस, 51वां दीक्षा दिवस एवं 15वां पदाभिषेक दिवस गुलाबबाड़ी स्थित तेरापंथ भवन में मनाया गया। तेरापंथ महिला मंडल के मंगल संगान के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य महाश्रमण प्राणवान आचार्य हैं। दीक्षित होते ही ऐसा ज्ञान मार्ग खुला कि दसवैकालिक, अभिधान चिन्तामणि, रामायण, भगवत गीता जैसे महाकाव्य कंठस्थ कर लिए। साध्वी विदितप्रभाजी ने मुक्तक के माध्यम से भावना व्यक्त की। साध्वी शीलयशाजी और साध्वी सलिलयशाजी ने आचार्यश्री महाश्रमण के दीक्षा कल्याण महोत्सव समापन समारोह के अवसर पर पूज्यचरणों में आध्यात्मिक भेंट अर्पित करने के लिए छह दिनों के निर्धारित छह संकल्पों को रोचक कार्यक्रम के द्वारा प्रस्तुति दी। इस शुभ अवसर पर तेरापंथ सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष गजराज बोथरा, पूर्व अध्यक्ष संजय बोथरा, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेन्द्र ने भावसुमनों को अर्पित किया।

श्रीडूंगरगढ़

आचार्य महाश्रमण का धैर्य, गाम्भीर्य, माधुर्य जन-जन को प्रभावित करता है। आचार्यश्री का अंतःकरण शांति, समता और करुणा से आप्लावित है। ये विचार 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्रीजी ने आचार्य श्री महाश्रमण के संयम जीवन के 50वर्ष की सम्पूर्णता पर मालू भवन में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य महाश्रमण ने अपना सम्पूर्ण जीवन परोपकार को समर्पित कर दिया है, आप का दीक्षोत्सव युगों-युगों तक मनाया जाए और सभी को प्रेरणा मिलती रहे। साध्वी सुमंगलाजी ने कहा कि आचार्य प्रवर ने देश-विदेशों में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश देकर राष्ट्र को समृद्ध करने की पदयात्रा की है। हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे विश्व संत का हमें सान्निध्य मिला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक ताराचन्द सारस्वत ने आचार्यप्रवर को नमन करते हुए उनके द्वारा देशभर में किए जा रहे नशामुक्ति के कार्य को सराहा और उनके जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजस्थान विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष रामगोपाल सुथार ने अपना एक संस्मरण सुनाते हुए संतों के जीवन को प्रेरणादायक कहा। सुथार ने कहा कि आचार्यश्री का स्नेहिल आशीर्वाद हमेशा उन्हें मिलता रहा है। कार्यक्रम में मौजूद उप-जिला कलेक्टर उमा मित्तल ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमणजी का दीक्षा दिवस मनाना पूरे समाज के लिए कल्याणकारी है। मुख्य वक्ता साहित्यकार डॉ. चेतन स्वामी ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमणजी में श्रेष्ठ आचार्य के सभी गुण तो हैं ही, परन्तु वे श्रेष्ठ शासनकर्ता भी हैं। उन्होंने तेरापंथ धर्म संघ को बहुत ऊंचाई तक पहुंचाया है। वे बौद्धिक होने के साथ दीर्घ तपस्वी भी हैं। डॉ. स्वामी ने कहा कि जिन जातियों, सम्प्रदायों के पास गुरु हैं, उन जातियों के लोग भौतिक और अभौतिक दोनों तरह की उन्नति का वरण कर रहे हैं। गुरु विहिन जातियां विभिन्न तरह के कालगत संक्रमणों से बच नहीं सकती। कार्यक्रम में आचार्यश्री महाश्रमण को श्रद्धासिक्त अभिनन्दन करते हुए नेता प्रतिपक्ष अंजू मनोज पारख ने मंगलाचरण करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सभाध्यक्ष विजयराज सेठिया, महिला मंडल संरक्षिका झिणकार देवी बोथरा, तुलसीराम चौरड़िया, अणुव्रत समिति से सत्यनारायण स्वामी, सुमित बरड़िया व शुभम बोथरा ने आचार्य प्रवर के प्रति अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में समागत अतिथियों का सभा द्वारा प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन पवन सेठिया ने किया।

सिलीगुड़ी

आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कार्यक्रम 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल सिलीगुड़ी द्वारा समणी निर्देशिका डॉ. मंजूप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष संगीता घोषल द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन पर एक नाटक की प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम में कई भाई-बहनों ने अपने भाव व्यक्त किए।

धागों से उकेरा आचार्यश्री का जीवन वृत्त

जालना। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के 50वें दीक्षा कल्याणक महोत्सव की संपन्नता के अवसर पर गुरु चरणों की अभ्यर्थना में आमेट से श्रीया हिंगड़ और आयुषी हिंगड़ दो बहनों ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के जीवन वृत्त को धागों से 50 कलाकृतियों पर उकेरा। इन कलाकृतियों में आचार्य महाश्रमण जी के जीवन से संबंधित विभिन्न प्रसंगों को दर्शाया गया। इन्हें आचार्य महाश्रमण जीवन झांकी 'मेड विथ थ्रेड' प्रदर्शनी के रूप में बताया गया। आचार्य प्रवर, मुख्यमुनि प्रवर, साध्वीप्रमुखाश्री जी, साध्वीवर्या जी एवं अनेक चारित्रात्माओं ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और अनुकंपा बरसाई। गुरुदेव ने विशेष कृपा कर मंगलपाठ सुनाया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा और अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने भी प्रदर्शनी का अवलोकन किया। धागों से निर्मित प्रदर्शनी को अनूठा प्रयास बताते हुए दोनों बहनों को इस क्षेत्र में और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। जालना विधायक एवं अन्य गणमान्य लोगों ने भी इस प्रदर्शनी को निहारा और आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन वृत्त को प्रदर्शनी के माध्यम से जाना। सम्पूर्ण समाज ने भी इस प्रदर्शनी का निरीक्षण किया। दोनों बहनों ने बताया कि उन्हें इस प्रदर्शनी की प्रेरणा मुनि हितेन्द्रकुमार जी से मिली। इस प्रदर्शनी में विभिन्न व्यक्तियों और तेरापंथ युवक परिषद, जालना का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

निःशुल्क फाइब्रो स्कैन शिविर का आयोजन

राजाजीनगर। युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के 63वें जन्म दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में लिवर से संबंधित रोगों की स्क्रीनिंग हेतु निःशुल्क फाइब्रो स्कैन शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। मणिपाल हॉस्पिटल के गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट डॉ. विद्यासागर रामप्पा ने निःशुल्क परामर्श प्रदान करते हुए शिविरार्थियों को खान-पान में शुद्धता, नियमित व्यायाम आदि सलाह प्रदान की। शिविर के अंतर्गत निःशुल्क रक्तचाप जांच भी की गई। इस शिविर में कुल 25 सदस्य लाभान्वित हुए जिसमें से लगभग 17 सदस्य फैटी लीवर ग्रेड 2 से ग्रस्त थे। तेयुप सदस्यों ने स्थानीय लोगों से वार्तालाप करते हुए एटीडीसी द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं एवं डॉक्टरों की उपलब्धता से अवगत करवाया। स्थानीय जनता ने परिषद परिवार के प्रति मंगलकामना संप्रेषित करते हुए सेन्टर द्वारा प्रदत्त सेवाओं के प्रति अपनी मंगलकामना व्यक्त की।

परिषद परिवार द्वारा डॉक्टर का जैन पट्ट से सम्मान किया गया। इस शिविर के सुव्यवस्थित आयोजन में एटीडीसी स्टाफ का सम्पूर्ण सहयोग रहा। तेयुप से सुनील मेहता, अनुज हीरावत एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

भूल सुधार

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स के अंक 36 के पृष्ठ 2 पर दिनांक 24 मई का शीर्षक 'पापों से बचने से दुःख का मूल भी हो सकता है उन्मूलित : आचार्यश्री महाश्रमण' की जगह 'समस्त प्राणियों के प्रति रखें अभय का भाव : आचार्यश्री महाश्रमण' पढ़ा जाए।

संक्षिप्त खबर

जीवन एक परियोजना विषय पर लेक्चर का आयोजन

औरंगाबाद। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम छत्रपति संभाजी नगर के तत्वावधान में जीवन एक परियोजना विषय पर लेक्चर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से पूजा बागरेचा एवं डॉ. रुपाली नाहर ने की। टीपीएफ अध्यक्ष डॉ. आनंद नाहर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए टीपीएफ की गतिविधियों की जानकारी दी।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अरविंद नाहटा ने जीवन के प्राइमरी, सेकेंडरी गोल निर्धारित कर जीवन सुंदर ढंग जीने की प्रेरणा दी। मुनि सिद्धकुमारजी ने जीवन में आध्यात्मिक उन्नति करने का आह्वान किया। मुनि रजनीशकुमारजी ने सभी को मिलजुल कर कार्य करने की प्रेरणा दी और जीवन में ईमानदारी व नैतिकता रखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में टीपीएफ वेस्ट जोन के सेक्रेटरी अंकुर लूणिया और टीपीएफ सूरत के मंत्री ने भी अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

कार्यक्रम के सुंदर संचालन मे जॉइंट सेक्रेटरी चेतन सुराणा, जॉइंट सेक्रेटरी डॉ. हर्षल कोठारी और सचिन जैन का बहुत अच्छा सहयोग मिला। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष निकिता मुथा और जॉइंट सेक्रेटरी अंकित बोथरा ने किया। आभार मंत्री श्रेया मुथा ने किया।

क्षेत्रीय श्रावक सम्मेलन कार्यक्रम

मुलुंड। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में क्षेत्रीय श्रावक सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया। मुनिश्री ने फरमाया कि श्रावक-श्राविकाओं का सहयोग मिलने से ही साधु-साध्वियों का संयम पलता है। श्रावक-श्राविकाओं को भगवान ने माता-पिता तुल्य बताया है। श्रावकों को अपने बारह व्रतों की जानकारी होनी चाहिए, उनका जीवन व्यसनमुक्त और साधनायुक्त होना चाहिए। प्रत्येक श्रावक-श्राविका अपने बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए प्रयत्नशील हो जिससे परिवार और धर्मसंघ की गरिमा महिमा बढ़ाने में आप सहयोगी बन सकें।

संघीय आयामों के विकास में श्रावक व श्राविकाओं की अहम भूमिका होती है। उपासक श्रेणी, ज्ञानशाला, प्रेक्षाध्यान, युवक परिषद, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्यामंडल में भी श्रावक-श्राविकाओं का उचित सहयोग मिले तब ही सभी सक्रिय और गतिशील बन सकते हैं। कार्यक्रम में गण्णपत डागलिया और सलिल लोढ़ा ने भी अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

संथारा समाचार

रायपुर। संथारा साधक छतरसिंह बच्छावत चाड़वास के जाने माने लेखक, कवि, वक्ता और संचालक थे। आपने 88 वर्ष की आयु में अक्षय तृतीया के दिन स्वयं संज्ञान लेते हुए 10 मई 2024 को रायपुर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गौतम गोलछा, पुत्री इंदू जैन एवं पुत्र कनक बच्छावत व समस्त पारिवारिक जनों की उपस्थिति में सागारी संथारा का प्रत्याख्यान किया।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महत्ती कृपा कर समणी निर्देशिका विपुल प्रज्ञाजी एवं समणी आदर्शप्रज्ञाजी को आध्यात्मिक संबल हेतु रायपुर भिजवाया। दिनांक 13 मई 2024 को गुरुदेव की आज्ञा अनुसार तिविहार सागारी संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया और 14 दिन बाद वैशाख शुक्ल पूर्णिमा की प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में 4 बजे चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया गया। दृढ़ मनोबल के साथ आपने धर्माराधना करते हुए 2 जून वैशाख कृष्णा दशमी को मध्यरात्रि 1:35 बजे नश्वर देह को त्याग दिया। आचार्यप्रवर ने परिवार को लगभग 3 बार संदेश प्रदान करवाए। श्री बच्छावत ने योजनात्मक ढंग से, पूर्ण सजगता व जागरूकता के साथ अनशन स्वीकार किया व समभाव से अपनी यात्रा पूर्ण की व श्रावक के अंतिम मनोरथ को सिद्ध किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **सरदारशहर।** सरदारशहर निवासी सूरत प्रवासी धर्मचंद जैन के सुपुत्र सुमित जैन का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, नरेन्द्र भंसाली ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **झाड़सुगड़ा।** डीडवाना निवासी झाड़सुगड़ा प्रवासी धर्मेन्द्र सिंह, जयंत सिंह मनोत का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक मालचंद भंसाली एवं पवन बैंगाणी ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

■ **बेंगलुरु।** सूरतगढ़ निवासी बेंगलुरु प्रवासी शिखा विवेक गोलछा सुपुत्र राजेन्द्र गोलछा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से सरजापुरा, बेंगलुरु में तेयुप बेंगलुरु से संबद्ध जैन संस्कारक अमित भंडारी ने करवाया।

■ **कोलकाता।** लाडनूं निवासी न्यूटाउन कोलकाता प्रवासी अनुराग जैन के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कारक पुष्पराज सुराणा एवं अनूप गंग ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा परिवार जनों की उपस्थिति मे संपादित करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **सूरत।** लोहावट निवासी सूरत प्रवासी मांगीलाल चोपड़ा के सुपुत्र नितिन चोपड़ा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **पीपरड़ा, राजसमन्द।** तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा दीपक श्रीमाल एवं नीरज चोरड़िया के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ पीपरड़ा (राजसमन्द) में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। विभिन्न मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़ ने कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी हैं अक्षय उर्जा के स्रोत : अर्जुनराम मेघवाल

उत्तर हावड़ा।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के दीक्षा कल्याण महोत्सव पर अपनी अभिवंदना समर्पित करने भारत सरकार के संसदीय कार्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में उपस्थित हुए। उत्तर हावड़ा स्थित श्रीराम वाटिका में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा उत्तर हावड़ा द्वारा यह गरिमा पूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मेघवाल ने कहा कि मैं राजनीति में विश्व के महान दार्शनिक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के आशीर्वाद से आया। मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में मैं अंहिसा, नैतिकता व नशामुक्ति पर बल देने वाले अणुव्रत आन्दोलन का सक्रिय सिपाही हूं।

अणुव्रत संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक के नाते मेरे अनेक कार्यक्रमों से चारित्र निर्माण व राष्ट्र उत्थान का सीधा संदेश गया है। मैं समय-समय पर आचार्य प्रवर के दर्शन करता रहता हूं, उन जैसे महापुरुषों से हमें उर्जा मिलती है, वास्तव में आचार्य श्री महाश्रमण जी अक्षय उर्जा के स्रोत हैं। उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- अनुत्तर श्रद्धा, अप्रतिहत निर्णय शक्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, अप्रतिम करुणा, अविरल चारित्र एवं उपशम कषाय के समुच्चय का नाम है- आचार्य श्री महाश्रमण। वे मानवता के मसीहा, शांति के देवता, वीतरागता की प्रतिमुर्ति, सिद्ध साधक अनुत्तर संयमयोगी, विनय वात्सल्य से भरपूर निश्छल व्यक्तित्व के धनी हैं। उनकी उज्ज्वल जीवन गाथा सबके लिए प्रेरणास्पद है। वे समय-समय पर समाज में व्याप्त बुराइयों व कुरुढ़ियों पर प्रहार करते हैं। वे प्रदर्शन नहीं निदर्शन की साधना पर बल देते हैं। वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के दिन सरदारशहर में आचार्य श्री तुलसी की आज्ञा से मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' के करकमलों से वे दीक्षित हुए। उनकी प्रतिभा एवं निष्ठा को देखकर आचार्य श्री तुलसी ने उनको महाश्रमण अलंकरण से अलंकृत किया और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में उन्हें युवाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित किया। लाखों-लाखों लोगों को अहिंसा यात्रा के जरिये सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति का पावन संदेश प्रदान किया। उनके दीक्षा के 50वर्षों की सम्पन्नता पर मंगलकामना करते हैं कि वे दीर्घायु हों, निरामय रहते हुए दीर्घकाल तक मानव समाज का पथ दर्शन करते रहें।

मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामायिक के साथ नमस्कार महामंत्र के जप अनुष्ठान से हुआ। अभ्यर्थना गीत उत्तर हावड़ा तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्यों द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती ने दिया। तेरापंथ कन्या मंडल ने महाश्रमण अष्टकम् का संगान किया। अभ्यर्थना के क्रम में कोलकाता की अनेकों सभाओं के पदाधिकारियों ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री सुरेन्द्र बोथरा ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल का सभा द्वारा सम्मान किया गया। मुनि जिनेशकुमार जी द्वारा रचित गीतों के फोल्डर 'श्रद्धा स्तुति' का उत्तर हावड़ा सभा ट्रस्ट द्वारा अनावरण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने संयम के संकल्प भी स्वीकार किए।

संबोधि

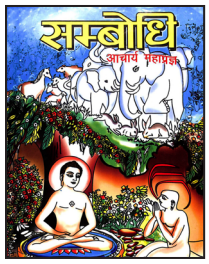

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

मेघः प्राह

३२. केनोपायेन देवेदं, मनः स्थैर्यं समश्नुते ?
स्वीकृतस्याध्वनो येनाऽप्रच्यवः सिद्धिमाप्नुयात् ॥

मेघ बोला–देव! किस उपाय से मन की स्थिरता प्राप्त हो सकती है, जिससे स्वीकृत मार्ग पर आरूढ़ रहने का मार्ग सिद्ध हो जाए।

भगवान् प्राह

३३. मनः साहसिको भीमो, दृष्टोऽश्वः परिधावति ।
सम्यग् निगृह्यते येन, स जनो नैव नश्यति ॥

भगवान् ने कहा–मन दुष्ट घोड़ा है। वह साहसिक और भयंकर है। वह दौड़ रहा है। उसे जो भली-भांति अपने अधीन करता है, वह मनुष्य नष्ट नहीं होता– सन्मार्ग से च्युत नहीं होता।

३४. उन्मार्गे प्रस्थिता ये च, ये च गच्छन्ति मार्गतः।
सर्वे ते विदिता यस्य, स जनो नैव नश्यति ॥

जो उन्मार्ग में चलते हैं और जो मार्ग में चलते हैं, वे सब जिसे ज्ञात हैं, वह मनुष्य नष्ट नहीं होता सन्मार्ग से च्युत नहीं होता।

३५. आत्मायमजितः शत्रुः, कषायाः इन्द्रियाणि च।
जित्वा तान् विहरेन्नित्यं, स जनो नैव नश्यति ॥

कषाय और इन्द्रियां शत्रु हैं। वह आत्मा भी शत्रु है, जो इनके द्वारा पराजित है। जो उन्हें जीतकर विहार करता है, वह मनुष्य नष्ट नहीं होता– सन्मार्ग से च्युत नहीं होता।

३६. रागद्वेषादयस्तीव्राः, स्नेहाः पाशा भयंकराः ।
ताञ्छित्वा विहरेन्नित्यं, स जनो नैव नश्यति ॥

प्रगाढ़ राग-द्वेष और स्नेह– ये भयंकर पाश हैं, जो इन्हें छिन्न कर विहार करता है, वह मनुष्य नष्ट नहीं होता– सन्मार्ग से च्युत नहीं होता।

३७. अन्तोहृदयसम्भूता, भवतृष्णा लता भवेत् ।
विहरेत्तां समुच्छित्य, स जनो नैव नश्यति ॥

यह भव-तृष्णा रूपी लता हृदय के भीतर उत्पन्न होती है। उसे उखाड़कर जो विहार करता है, वह मनुष्य नष्ट नहीं होता– सन्मार्ग से च्युत नहीं होता।

३८. कषाया अग्नयः प्रोक्ताः, श्रुत-शील-तपोजलम् ।
एतद्वाराहता यस्य, स जनो नैव नश्यति ॥

कषायों को अग्नि कहा गया है। श्रुत, शील और तप-यह जल है। जिसने इस जलधारा से कषायाग्नि को आहत कर डाला-बुझा डाला, वह मनुष्य नष्ट नहीं होता– सन्मार्ग से च्युत नहीं होता।

इन श्लोकों में कुमारश्रमण केशी और गणधर गौतम के प्रश्न और उत्तर हैं।

कुमारश्रमण केशी भगवान् पार्श्वनाथ की परंपरा के चौथे पट्टधर थे। एक बार वे ग्रामानुग्राम विहार करते हुए श्रावस्ती में आए और 'तिन्दुक' उद्यान में ठहरे। भगवान् महावीर के शिष्य गणधर गौतम भी संयोगवश उसी नगर में आए और 'कोष्टक' उद्यान में ठहरे। दोनों के शिष्यों ने एक–दूसरे को देखा। बाह्य वेशभूषा, व्यवहार आदि की भिन्नता के कारण उनमें ऊहापोह होने लगा। दोनों आचार्यों ने यह सुना। वे शिष्यों की शंकाओं का निराकरण करना चाहते थे, अतः वे एक स्थान पर मिले। आपस में संवाद हुआ। प्रश्नोत्तर चले।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

आदिवासियों के बीच

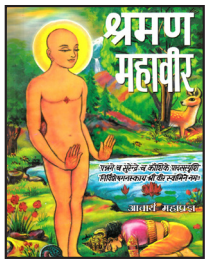

'उस प्रदेश में तिल नहीं होते थे। गाएं भी बहुत कम थीं। जो थीं, उनके भी दूध बहुत कम होता था। वहां कपास नहीं होती थी। आदिवासी घास के प्रावरण ओढ़ते-पहनते थे। उनका भोजन रूखा था–घी और तेल से रहित। वहां के किसान प्रातःकालीन भोजन में अम्लरस के साथ ठंडा भात खाते थे। उसमें नमक नहीं होता था। मध्यान्ह के भोजन में वे रूखे चावल और मांस खाते थे। इस रूक्ष भोजन के कारण वे बहुत क्रोधी थे। बात-बात पर लड़ते-झगड़ते रहते थे। गाली देना और मारना-पीटना उनके लिए सहज कर्म जैसा था। भगवान् एक गांव में जा रहे थे। ग्रामवासी लोगों ने कहा, 'नग्न! तुम किसलिए हमारे गांव में जा रहे हो? वापस चले जाओ।' भगवान् वापस चले आए।

भगवान् एक गांव में गए। वहां किसी ने ठहरने को स्थान नहीं दिया। वे वापस जंगल में जा पेड़ के नीचे ठहर गए।

'आप क्षमा करेंगे, मैं बीच में ही एक बात पूछ लेता हूं–भगवान् एकांतवास के लिए वहां गए, फिर उन्हें क्या आवश्यकता थी गांव में जाने की?'

'भगवान आहार-पानी लेने के लिए गांव में जाते थे। छह मासिक प्रवास में वे वर्षावास बिताने के लिए गांव में गये। कहीं भी कोई स्थान नहीं मिला। उन्होंने वह वर्षावास इधर-उधर घूमकर, पेड़ों के नीचे, बिताया। कभी-कभी आदिवासी लोग रुष्ट होकर उन्हें शारीरिक यातना भी देते थे।'

'क्या उस पर्वतीय प्रदेश में भगवान् को जंगली जानवरों का कष्ट नहीं हआ ?'

'मुझे नहीं मालूम कि उन्हें सिंह-बाघ का सामना करना पड़ा या नहीं, किन्तु यह मुझे मालूम है कि कुत्तों ने उन्हें बहुत सताया। वहां कुत्ते बड़े भयानक थे। पास में लाठी होने पर भी वे काट लेते थे। भगवान के पास न लाठी थी और न नालिका। उन्हें कुत्ते घेर लेते और काटने लग जाते। कुछ लोग छू-छूकर कुत्तों को बुलाते और भगवान को काटने के लिए इंगित करते। वे भगवान पर झपटते, तब आदिवासी लोग हर्ष से झूम उठते। कुछ लोग भले भी थे। वे वहां जाकर कुत्तों को दूर भगा देते थे।

एक बार भगवान् पूर्व दिशा की ओर मुंह कर खड़े–खड़े सूर्य का आतप ले रहे थे। कुछ लोग आए। सामने खड़े हो गए। भगवान् ने उनकी ओर नहीं देखा। वे चिढ़ गये। वे हूं–हूं कर भगवान् पर थूककर चले गए। भगवान् शांत खड़े रहे। वे परस्पर कहने लगे, 'अरे! यह कैसा आदमी है, थूकने पर भी क्रोध नहीं करता, गालियां नहीं देता।'

एक बोला, 'देखो, मैं अब इसे गुस्से में लाता हूं।'

वह धूल लेकर आया। भगवान् की आखें अधखुली थीं। उसने भगवान् पर धूल फेंकी। भगवान् ने न आखें मूंदी और न क्रोध किया। उसका प्रयत्न विफल हो गया। उसने क्रुद्ध होकर भगवान् पर मुष्टि-प्रहार किया। फिर भी भगवान् की शांति भंग नहीं हुई। उसने ढेले फेंके। हड्डियां फेंकी। आखिर भाले से प्रहार किया। लोग खड़े-खड़े चिल्लाने लगे। भगवान् वैसे ही मौन और शांत थे। उनकी मुद्रा से प्रसन्नता टपक रही थी। वह बोला, 'चलो, चलें। यह कोई आदमी नहीं है। यदि आदमी होता तो जरूर गुस्से में आ जाता।

एक बार भगवान् पर्वत की तलहटी में ध्यान कर रहे थे। पद्मासन लगाकर बैठे थे। कुछ लोग जंगल में काम करने के लिए जा रहे थे। उन्होंने भगवान् को बैठे हुए देखा। वे इस मुद्रा में बैठे आदमी को पहली बार देख रहे थे। वे कुतूहलवश खड़े हो गए। घंटा भर खड़े रहे। भगवान् तनिक भी इधर-उधर नहीं डोले। वे असमंजस में पड़ गए। यह कौन है, कोई आदमी है या और कुछ? एक आदमी आगे बढ़ा। उसने जाकर धक्का दिया। भगवान् लुढ़क गए। भगवान् फिर पद्मासन लगा ध्यान में स्थिर हो गए। वे भद्रप्रकृति के आदमी थे। भगवान् की प्रशांत मुद्रा देख उनका शांतभाव जागृत हो गया। वे भगवान् के निकट आए, पैरों में प्रणत होकर बोले, 'हमने आपको कष्ट दिया है। आप हमें क्षमा करना। 'क्या भगवान् आदिवासी लोगों से बातचीत करते थे?' मैंने पूछा।

देवर्धिगणी ने कहा, 'भगवान् बातचीत करने में रस नहीं लेते थे। उनका रस सब विषयों से सिमटकर केवल सत्य की खोज में ही केन्द्रित हो रहा था। अपरिचित चेहरा देखकर कुछ लोग भगवान् के पास आकर बैठ जाते। वे पूछते, 'तुम कौन हो?'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

अन्तर्मुखी बनने का प्रयोग

कषाय-प्रयोग से होने वाली हानियों का उल्लेख दशवैकालिक सूत्र में मिलता है-

कोहो पीइं पणासेइ– क्रोध प्रीति का नाश करता है।

माणो विणयनासणो– अभिमान विनय का नाश करता है।

माया मित्ताणि नासेइ– माया मित्रता का विनाश करती है।

लोहो सब्व विणासणो– लोभ सब का विनाश करता है।

इन चारों को जीतने के लिए एक-एक उपाय भी निर्दिष्ट किया गया है-

उवसमेण हणे कोहं– उपशम के द्वारा क्रोध का हनन करो।

माणं मद्दवया जिणे– मृदुता के द्वारा अभिमान को जीतो।

मायं चज्जवभावेण– ऋजुता के द्वारा माया को जीतो।

लोहं संतोसओ जिणे– सन्तोष के द्वारा लोभ को जीतो।

प्रतिपक्ष भावना दुर्वृत्तियों को जीतने का उपाय है। क्रोध की वृत्ति को नियन्त्रित करने के लिए उपशम का अभ्यास किया जाए, उपशम को अनुप्रेक्षा (भावना, अनुचिन्तन) की जाए। उत्कण्ठापूर्वक उपशम की साधना क्रोधमुक्ति का उपाय है। इसी प्रकार अभिमान, माया और लोभ को वृत्ति का शोधन करने के लिए क्रमशः मृदुता, ऋजुता और सन्तोष (अनासक्ति) की अनुप्रेक्षा एवं अभ्यास अपेक्षित है।

योग-प्रतिसंलीनता

१०. **मनोयोग-प्रतिसंलीनता–** अकुशल मन का निरोध, कुशल मन की उदीरणा और मन को एकाग्र करना, अमन की स्थिति को प्राप्त होना।

११. **वचनयोग-प्रतिसंलीनता–** अकुशल वचन का निरोध, कुशल वचन की उदीरणा और मौन का अभ्यास।

१२. **कायप्रतिसंलीनता–** कायगुप्ति का अभ्यास करना, हाथ, पैर आदि शरीर के अवयवों को संकुचित कर रखना, शारीरिक स्थिरता का प्रयोग करना।

विविक्त शयनासन-सेवन

१३. **विविक्त शयनासन-सेवन–** एकान्त स्थान– जहां पशु, स्त्री (विपरीतलिंगी) आदि न हों, वहां रहना।

यह एकान्तवास की साधना का प्रयोग है। साधना की पूर्ण परिपक्वता के बाद बाहर के निमित्तों का कोई प्रभाव नहीं होता पर पूर्ण परिपक्वता के अभाव में निमित्तों से बचना सुरक्षा कवच की तरह आवश्यक है।

प्रतिसंलीनता अंतर्मुखी बनने का मार्ग है, साधना को विशिष्ट बनाने का प्रयोग है। यह बाह्यतप का एक प्रकार है पर आभ्यन्तर तप से भी इसकी बहुत निकटता प्रतीत होती है।

विशुद्धि का प्रयोग

साधक वह होता है जो अपना शोधन करता रहता है। जहां शोधन की अपेक्षा ही नहीं रहती, पूर्ण विशुद्धि की स्थिति प्राप्त हो जाती है वह 'सिद्ध' अवस्था है। साधना अथवा विशुद्धि की तरतमता के आधार पर चौदह भूमिकाएं आगम में निर्दिष्ट हैं। छठी भूमिका (प्रमत्त संयत गुणस्थान) तक प्रमाद, त्रुटि अथवा अपराध हो सकता है। उसके विशोधन का प्रयोग है प्रायश्चित्त।

प्रायश्चित्त एक प्रकार की चिकित्सा है। चिकित्सा रोगी को कष्ट देने के लिए नहीं, किन्तु रोग निवारण के लिए की जाती है। इसी प्रकार प्रायश्चित्त भी राग, द्वेष अथवा तज्जनित अपराधों के संशोधन के लिए किया जाता है। दोष, दोषसेवन कर्त्ता, प्रायश्चित्त और प्रायश्चित्त प्रदाता की क्रमशः रोग, रोगी, औषध और वैद्य से तुलना की जा सकती है। रोग और रोगी दोनों को दृष्टिगत रखकर औषध का निर्णय करने वाला वैद्य कुशल वैद्य होता है। प्रायश्चित्त देने वाले के लिए भी दोष और दोषी दोनों को ध्यान में रखकर प्रायश्चित्त का निर्धारण करना अपेक्षित होता है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री उदयचन्दजी 'बड़ा' (आहेड़) दीक्षा क्रमांक : 94

मुनिश्री बड़े आत्मार्थी, सरल स्वभावी और तपस्वी थे। उन्होंने तपस्या बहुत की। आजीवन बेले-बेले तप किया। लगभग 17 साल उन्होंने बेले-बेले तप किया। उन्होंने शीतकाल में बहुत शीत सहन किया और उष्णकाल में आतापना ली। तपस्या के साथ उनकी सेवाभावना भी अच्छी थी।

– साभार: शासन समुद्र –

जून 2024 सप्ताह के विशेष दिन

24 जून – आचार्यश्री तुलसी 28वां महाप्रयाण दिवस कल्याणक

25 जून – भगवान ऋषभ च्यवन कल्याणक

28 जून – भगवान विमलनाथ निर्वाण कल्याणक

30 जून – भगवान नमिनाथ दीक्षा कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

नई कार्यकारिणी के सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह

इंदौर।

साध्वी रचनाश्री जी ठाणा 4 के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के नई कार्यकारिणी के सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के नवकार मंत्र के संगान के साथ हुआ। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। निर्मल नाहटा ने अपने कार्यकाल की समीक्षात्मक प्रस्तुति दी।

महासभा के आंचलिक प्रभारी निलेश रांका ने श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के वर्ष 2024-26 के नव निर्वाचित अध्यक्ष पद हेतु पुनः निर्मल नाहटा के नाम की घोषणा करते हुए उन्हें विधिवत शपथ दिलाई। तत्पश्चात सभा के मंत्री राकेश भंडारी व समस्त पदाधिकारी की घोषणा करते हुए उन्हें शपथ दिलाई। मंत्री राकेश भंडारी ने कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए निलेश रांका द्वारा शपथ विधि संपूर्ण कराई गई। शपथ के नवमनोनीत अध्यक्ष निर्मल नाहटा ने अपने विचार व्यक्त किए। आंचलिक प्रभारी निलेश रांका का उद्बोधन हुआ। अणुव्रत समिति की ओर से मनीष कठोतिया एवं निलेश पोखरना ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए नवनिर्वाचित अध्यक्ष निर्मल नाहटा व मंत्री राकेश भंडारी का सम्मान किया।

शपथ विधि के पश्चात अध्यक्ष निर्मल नाहटा द्वारा तेरापंथ सभा के नवमनोनीत कोषाध्यक्ष राजेश मेहता को तेरापंथ सभा इंदौर के पिछले वर्ष का लेखा जोखा व कोष को सुपुर्द किया। साध्वी रचनाश्रीजी ने सारगर्भित उद्बोधन दिया।

मंत्री राकेश भंडारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें आप सभी के सहयोग व संगठन से इंदौर तेरापंथ सभा के समस्त दायित्वों का निर्वहन करते हुए नये कीर्तिमान स्थापित करना है। सभा की सहमंत्री सुमन दुगड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा नोखा का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित

नोखा।

'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन नोखा में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा नोखा का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इंदरचंद बैद ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा नोखा के नवनियुक्त अध्यक्ष शुभकरण चौरड़िया एवं उनकी टीम को निवर्तमान अध्यक्ष निर्मल कुमार भूरा ने शपथ दिलाई। इसी कार्यक्रम में जोरावरपुरा के नव नवनिर्वाचित अध्यक्ष बाबूलाल बुच्चा को भी भीखमचंद बुच्चा द्वारा शपथ दिलाई गई।

इस अवसर पर 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी ने कहा कि सबको मिलकर धर्म संघ की सेवा करनी है। शुभकरण चोरड़िया ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष प्रथम लाभचंद छाजेड़, उपाध्यक्ष द्वितीय महावीर नाहटा, मंत्री मनोज घीया, सहमंत्री प्रथम अनुराग बैद, सहमंत्री द्वितीय राजेन्द्र डागा, कोषाध्यक्ष सुन्दर लाल सेठिया एवं संगठन मंत्री ओमप्रकाश गोलछा को नियुक्त किया।

इस अवसर पर शुभकरण चौरडिया, बाबूलाल बुच्चा, निर्मल कुमार भूरा, लाभचंद छाजेड़, मनोज घीया, इंदरचंद बैद आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

इसी प्रकार जोरावर के नवनियुक्त अध्यक्ष बाबूलाल बुच्चा ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष प्रथम माणिकचन्द जैन, उपाध्यक्ष द्वितीय संतोष कुमार बैद, मंत्री शान्ति कुमार बैद, सहमंत्री प्रथम निर्मल बुच्चा, सहमंत्री द्वितीय जीवराज मरोठी कोषाध्यक्ष कन्हैया लाल छाजेड़ एवं संगठन मंत्री ईश्वरचन्द छोजेड़ को नियुक्त किया।

प्रथम भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण
गुजरात कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के महनीय आयाम 'भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला' की सम्पूर्ण गुजरात में प्रथम कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनि मुनिसुव्रत कुमारजी एवं सुशिष्य मुनि डॉ. मदनकुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता की अध्यक्षता में विधिवत शुभारंभ हुआ। किशोर मंडल टीम ने भिक्षु अष्टकम से मंगलाचरण किया। विजय गीत एवं श्रावक निष्ठापत्र के वाचन के पश्चात् तेयुप अहमदाबाद के अध्यक्ष कपिल पोखरना ने अपने स्वागत वक्तव्य में संपूर्ण समाज का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

अभातेयुप सहमंत्री-॥ लक्की कोठारी, प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने भी अपने विचार रखे। राष्ट्रीय प्रभारी दीपक रांका ने तेरापंथ दर्शन को जानने की सभी को प्रेरणा दी। जयेश मेहता ने सभी को तेरापंथ के प्राण - मर्यादाओं पर अटूट रहकर महामना भिक्षु स्वामी की विचार क्रांति को समझने की प्रेरणा दी।

मुनि शुभमकुमार जी ने अपने उद्बोधन में समाज को मिथ्यादर्शन से दूर होकर सम्यक् दर्शन को जानने की प्रेरणा दी और बताया कि लौकिक कार्यों में किसी प्रकार का धर्म नहीं होता है। डालिमचंद नौलखा ने आज की कार्यशाला के विषय पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित श्रावक समाज को तेरापंथ के जानकार बन कर इसके वक्ता बनने की प्रेरणा दी। मुख्यवक्ता मुनि मदनकुमार जी ने विस्तृत रूप में भिक्षु विचार दर्शन की मूल बातें उपस्थित श्रावक समाज के सामने रखी और हर जिज्ञासा का उचित समाधान भी किया।

सभी ने कार्यशाला के आयोजन के लिये अभातेयुप और तेयुप अहमदाबाद की सराहना करते हुए भविष्य में ऐसी और कार्यशालाओं का आयोजन करने के लिए कहा। कार्यशाला में सहभागी परिषद अमरईवाडी-ओढ़व, भुज-कच्छ, खेड़ा के संभागियों की भी उपस्थिति रही।

मुख्य प्रवचन के पश्चात् कार्यशाला के सहयोगी परिवारों का सम्मान किया गया। कार्यशाला को सफल बनाने में प्रदीप बागरेचा, वैभव कोठारी, पंकज डांगी, दिलीप भंसाली, जय छाजेड, विजय छाजेड, प्रशांत नाहटा, रोहित संकलेचा एवं आकाश डोसी का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम में अहमदाबाद अभातेयुप परिवार के साथीगण, तेयुप अहमदाबाद के अध्यक्ष कपिल पोखरना, मंत्री कुलदीप नवलखा एवं पदाधिकारी गण, विभिन्न सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी गण, समाज के गणमान्य व्यक्तियों की एवं संभागियों की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेयुप, अहमदाबाद के उपाध्यक्ष प्रथम प्रदीप बागरेचा एवं कोषाध्यक्ष वैभव कोठारी ने किया। आभार ज्ञापन रोहित संकलेचा ने किया।

तपोभूमि सिरियारी में मिलता है परम शान्ति और आनंद का अनुभव

सिरियारी।

आचार्यश्री भिक्षु की तपोस्थली सिरियारी में स्थित हेम अतिथि गृह में तेरापंथ के तृतीय आचार्यश्री रायचन्द जी की जन्म एवम् दीक्षा भूमि रावलिया से 180 व्यक्तियों का संघ उपस्थित हुआ।

शनिवार की सामायिक अनुष्ठान की सम्पन्नता के पश्चात् एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने कहा सिरियारी तेरापंथ की महान् तीर्थभूमि है।

इस भूमि के कण-कण में आचार्यश्री भिक्षु के तप-त्याग-साधना के आलेख हैं। उसी का प्रभाव है कि यहां प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं का आगमन होता रहता है।

न केवल तेरापंथी-जैन अपितु जैनेत्तर समाज के लोग भी यहां पर आते रहते हैं। अतः यह भूमि सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। भिक्षु की तीर्थभूमि में सबकी इच्छाओं को पूर्ण होने का अवसर मिलता है।

इस अवसर पर मुनि धर्मेशकुमार जी ने कहा- श्रीमद् आचार्य भिक्षु मानव जाति के श्रद्धेय बने हुए हैं।

यहां आने वालों को अनूठा आनन्द, परम शान्ति व आत्मिक निर्मलता को अनुभव होता है बशर्ते व्यक्ति ध्यान के माध्यम से अन्तर में उतरने का प्रयत्न करता है। रावलिया - तेरापंथ के तृतीय आचार्यश्री रायचन्दजी की जन्म एवं दीक्षा भूमि होने से उस क्षेत्र का भी बहुत महत्व है।

ब्रह्मऋषि के रूप प्रख्यात आचार्यश्री रायचन्दजी ने धर्मसंध के चहुंमुखी विकास के द्वार उद्घाटित किए।

वर्तमान में उनकी जन्म एवं दीक्षा भूमि का अच्छा विकास हो रहा है। वहां चलने वाले प्रेक्षा ध्यान केन्द्र की गतिविधियों से सभी लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

इस अवसर पर कमलेश बम्ब ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए पारिवारिक परिचय दिया। हेमन्त बम्ब ने बताया कि 180 व्यक्तियों ने समाधि स्थल पर सामूहिक जप आराधना कर अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति दी।

आगामी परमपूज्य गुरुदेव के सूरत चातुर्मास का अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए प्रेरणा प्रदान की।

अभातेयुप के तत्वावधान में हुए कर्नाटक स्तरीय भिक्षु दर्शन कार्यशाला एवं अन्य कार्यक्रम

राजाजीनगर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सिद्धप्रभा जी एवं साध्वी उदितयशाजी आदि ठाणा के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा कर्नाटक स्तरीय 'भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला' अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में समायोजित हुई।

कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया गया। भिक्षु श्रद्धा स्वर द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अभातेयुप द्वारा निर्देशित भिक्षु दर्शन कार्यशाला पर प्रकाश डालते हुए तेयुप राजाजीनगर के प्रति मंगलकामना संप्रेषित की।

साध्वी सिद्धप्रभाजी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि मुनि थिरपाल जी एवं मुनि फतेहचंद जी स्वामी ने आचार्यश्री भिक्षु से निवेदन किया कि अपने मौन का त्याग करते हुए जन-जन को भगवान महावीर के सिद्धांत से अवगत करवाएं। स्वामीजी ने धनवंतरी के रूप में जैन सिद्धान्त को जन-जन तक पहुंचाने का काम किया। साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि जो भिक्षु दर्शन को समझ पायेगा वह हर उलझन को सुलझा पाएगा।

साध्वीश्री ने धर्म की परिभाषा का विश्लेषण करते हुए स्वामी जी की गौरव गाथा सुनाई। पूज्य प्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा स्वामीजी की जन्मस्थली कंटालिया पर त्रि-शताब्दी के अवसर पर उद्घोषित तीन कार्य 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का जप, तेरापंथ प्रबोध का संगान एवं भिक्षु विचार दर्शन का स्वाध्याय की जानकारी प्रदान की।

साध्वी संगीतप्रभा जी ने आचार्यश्री भिक्षु द्वारा लिखित मर्यादाओं की जानकारी प्रदान की। साध्वी वृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया।

मुख्य अतिथि विमल कटारिया, विशिष्ट अतिथि अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, संभाग प्रमुख अमित दक, राजाजीनगर सभा अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए परिषद परिवार के प्रति शुभकामनाएं संप्रेषित की।

कार्यशाला में अभातेयुप परिवार, तेयुप कोप्पल, चिकमंगलूर, गांधीनगर, विजयनगर, हनुमंतनगर, दासरहल्ली, राजराजेश्वरीनगर, यशवंतपुर, राजाजी नगर की युवा शक्ति एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। मंच संचालन राजेश देरासरिया एवं आभार संयोजक सतीश पोरवाड़ ने किया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग दीक्षांत समारोह

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का दीक्षांत समारोह केएलई स्कूल सोसाइटी ऑडिटोरियम राजाजीनगर में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। दीक्षांत समारोह का विधिवत आगाज राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा किया गया। भिक्षु श्रद्धा स्वर ने विजय गीत का संगान किया। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का स्वागत करते हुए मंगलकामना संप्रेषित की।

सप्त दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षक धर्मेश कोठारी, जिनेश हीरावत एवं अरविंद पोखरणा ने संभागियों को प्रभावी वक्तव्य की कला सिखाई। सभी प्रतिभागियों ने अपने वक्तव्य की प्रस्तुति दी। नेशनल प्रोविजनल ट्रेनर अरविंद पोखरणा ने विशेष सात प्रतिभागियों की घोषणा की जिन्हें अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा पुरस्कृत किया गया। तेयुप राजाजीनगर द्वारा अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष, अभातेयुप परिवार, ट्रेनर्स का सम्मान करते हुए सभी प्रतिभागियों का प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सीपीएस सहप्रभारी सोनू डागा ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, तेयुप गांधीनगर अध्यक्ष रजत बैद, तेयुप प्रबंध मंडल आदि की उपस्थिति रही।

नवीन उरेसिस एनालाइजर मशीन का उद्घाटन

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में नवीन उरेसिस एनालाइजर मशीन का उद्घाटन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक रनीत कोठारी, सतीश पोरवाड़ एवं राजेश देरासरिया ने जैन संस्कार विधि का विश्लेषण करते हुए विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार के उच्चारण के साथ मशीनरी का उद्घाटन प्रायोजक परिवार प्रकाशचंद विकासकुमार अभिषेक कुमार बोल्या खरनोटा द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का स्वागत किया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने शुभकामनाएं संप्रेषित करते हुए अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित एटीडीसी-श्रीरामपुरम सक्रिय सेन्टर है, परिषद हर क्षेत्र में अपने कार्य संपादित कर रही है। अभातेयुप परामर्शक विमल कटारिया ने अपने विचार व्यक्त

करते हुए परिषद परिवार के प्रति मंगलकामनाएं संप्रेषित की। इस अवसर पर अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोकरना, एटीडीसी राष्ट्रीय सह-प्रभारी आलोक छाजेड़, नवरतन दक, सीपीस राष्ट्रीय सह-प्रभारी सोनू डागा, बंगलोर की स्थानीय परिषदों के अध्यक्ष, स्थानीय ATDC के संयोजक, अभातेयुप परिवार, तेयुप प्रबंध मंडल एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

भिक्षु भक्ति संध्या का आयोजन

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा केएलई सोसाइटी स्कूल राजाजीनगर में भव्य भिक्षु भक्ति संध्या का समायोजन किया गया। भक्ति संध्या की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने पधारे हुए भिक्षु भक्तों का स्वागत करते हुए अपने आराध्य के प्रति अभ्यर्थना व्यक्त की। तेयुप राजाजीनगर द्वारा संचालित भिक्षु श्रद्धा स्वर से संजय मांडोत एवं जितेंद्र कोठारी ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

भीलवाड़ा से समागत मधुर गायक ऋषि दुगड़ ने वातावरण को भिक्षुमय बनाते हुए स्वामीजी के अनेक दृष्टांत, गीत एवं लघुकथा के माध्यम से उपस्थित श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। प्रायोजक परिवार हनुमानमल संजय बैद, प्रकाशचंद विकास बोल्या, रोशनलाल दिनेश पोखरणा, मनोहरलाल गौतमचंद गन्ना एवं गौतमचंद संपतलाल दक परिवार का तेयुप द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर सभा परिवार, बैंगलोर के सभी युवक परिषद अध्यक्ष, युवा शक्ति एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

अक्षय तृतीया दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

बीदासर

समाधि केन्द्र, बीदासर में बड़े हर्षोल्लास के साथ अक्षय तृतीया कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी ने वैदिक, भारतीय एवं जैन संस्कृति में अक्षय तृतीया के दिन के महत्त्व को उजागर करते हुए कहा कि अक्षय तृतीया के दिन महाभारत ग्रंथ लिखना प्रारंभ हुआ, महादानी युधिष्ठिर को अक्षय पात्र प्राप्त हुआ, तेरापंथ के द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी का जन्म भी आज के दिन हुआ। आज के दिन किसान बीजों की बुवाई करते हैं ताकि उनके भंडार अक्षुण्ण भरे रहें। आज कोई भी शुभ कार्य प्रारंभ करने का सर्वश्रेष्ठ दिन है। तथा आज ही के दिन भगवान ऋषभ ने प्रलम्ब तपस्या का पारणा कर इस दिन को और पूजनीय बना दिया। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभाजी ने बीदासर में हुई तपस्याओं का उल्लेख करते हुए बीदासर को तपोभूमि मानने के कारणों से अवगत करवाया। 'शासनश्री' साध्वी कुलप्रभाजी ने स्वरचित कविता एवं 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी ने स्वरचित गीतिका के माध्यम से तपस्वियों का आध्यात्मिक अनुमोदन किया।

'शासनश्री' साध्वी विमलप्रभाजी एवं वर्षीतप संपन्न कर रही साध्वी मननीयप्रभाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञानशाला के बच्चों ने भगवान ऋषभ के पारणे के प्रसंग को सुंदर नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद एवं महिला मंडल ने सुमधुर गीत का संगान किया। महिला मंडल सदस्या अल्का बांठिया, तेरापंथ सभा के सदस्य अजीत बैंगानी, अणुव्रत समिति सदस्य दानमल बांठिया एवं महावीर बैद, समाधि केन्द्र व्यवस्थापक रवि सेखानी, शक्ति पीठ गंगाशहर के मंत्री दीपक आंचलिया तथा तपस्विनी बहनों के पारिवारिकजनों ने तप अनुमोदन किया। सरोज बांठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी नम्रताश्रीजी ने किया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में तपस्विनी बहनों का सम्मान किया गया जिसका संचालन नेहा बैंगानी ने किया।

दुर्गापुर

अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी मधुरप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- भारतीय संस्कृति उत्सव प्रधान संस्कृति है। इस संस्कृति में अनेक उत्सव आते हैं। कुछ उत्सव खाने-पीने और सजने के होते हैं तो कुछ न खाकर मनाने के उत्सव होते हैं। जैन आगमों में अनेक प्रकार के तप का वर्णन है- भद्रोतप, महाभद्रोतप, कंठी तप, चंदनबाला तप आदि। आज का तप भगवान ऋषभ के साथ जुड़ा हुआ है। वैसे भी भारतीय संस्कृति में अक्षय तृतीया का दिन बहुत शुभ माना गया है। किसी भी शुभ कार्य करने के लिए आज के दिन का मुहूर्त निकलवाना नहीं पड़ता। आज का दिन स्वतः शुभ है। भगवान ऋषभ ने असि-मसि और कृषि के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक कार्य के क्षेत्रों को बढ़ाया। जब उन्हें लगा कि अब मुझे धर्म का प्रकाश फैलाना है तब वे दीक्षित हो विचरण करने लगे। आज के दिन भगवान ऋषभ ने लगभग 13 महीनों की तपस्या का पारणा प्रपौत्र श्रेयांस के हाथों से किया। आज भी लोग भगवान की स्मृति को तरोताजा बनाए रखने के लिए एक साल तक वर्षीतप करते हैं और आज के दिन पारणा करते हैं। अमराव बाई बोरड़ एवं मंजु बाई सेठिया ने भी वर्षीतप कर भगवान के प्रति श्रद्धा समर्पित की है। समणी जी ने आगे फरमाते हुए कहा- तप शरीर को सुन्दर बनाने के लिए नहीं अपितु कार्मण शरीर की शुद्धि के लिए किया जाता है। तप से हमारी आत्मा निर्मल और पवित्र होती चली जाती है। बोरड़, बैद एवं बोथरा परिवार के सदस्यों, ज्ञानशाला एवं महिला मंडल द्वारा वक्तव्य, गीतिका एवं नाटक के माध्यम से प्रस्तुति दी गई। सुगंधा बोरड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

शाहदरा - दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी एवं साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में समुदाय-भवन में अक्षय-तृतीया वर्षीतप समारोह का भव्य आयोजन दिल्ली एवं शाहदरा सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में समायोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- भगवान ऋषभ इस युग के जनक थे, कर्मयुग एवं धर्मयुग के प्रणेता था। उन्होंने असि, मसि, कृषि का सम्यक् प्रवर्तन कर अध्यात्म-युग का प्रवर्तन करने के लिए सन्यास का मार्ग स्वीकार किया। लोग भिक्षु की भिक्षाविधि से अनजान थे इसलिए तेरह महीने दस दिन तक भिक्षा नहीं मिली। आखिर अक्षय तृतीया के दिन पड़पौत्र श्रेयांस ने इक्षुरस के द्वारा आदिनाथ भगवान का पारणा करवाया। भगवान ऋषभ की स्मृति में आज भी जैन समाज के हजारों-हजारों व्यक्ति वर्षीतप कर आत्म उज्जवलता को बढ़ाते हैं। साध्वीश्री ने कहा आज साध्वी संगीतश्रीजी आदि चारों साध्वियां चौथा वर्षीतप सानंद संपन्न कर आह्लादित हो रही हैं। यह तेरापंथ धर्मसंघ का विरल सिंघाड़ा एवं इकलौता सिंघाड़ा हैं जिसमें सारी साध्वियां वर्षीतप कर रही हैं । आज हमें वर्षीतप अनुमोदना एवं पारणा करवाने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है। साध्वीश्री ने कहा आज बारह तपस्वी बैठे हैं, सभी ने दृढ मनोबल एवं आत्मबल से वर्षीतप किया है। साध्वी संगीतश्रीजी ने अपने हृदयोदगार व्यक्त करते हुए कहा जैन परम्परा में अनेक त्योहार आते हैं, उनमें एक है- अक्षय तृतीया। भगवान ऋषभ की स्मृति में मनाया जाने वाला यह महत्वपूर्ण उत्सव है। भगवान ऋषभ किसी व्यक्ति का नाम नहीं एक संस्कृति, परम्परा, सभ्यता एवं गौरवशाली इतिहास का नाम है। अक्षय तृतीया बहुत शुभ दिन माना गया है यदि इस दिन सोमवार और साथ में रोहिणी नक्षत्र हो तो पोबारा पच्चीस होता है। आज गुरुदेव की कृपा से हम चारों साध्वियों के वर्षीतप सानंद संपन्न हो रहा है। पूज्य गुरुदेव एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने हमें संदेश प्रदान कर वात्सल्य की कृपा वृष्टि की है। मेरे व साध्वी शांतिप्रभाजी के सातवां वर्षीतप एवं साध्वी कमलविभाजी एवं साध्वी मुदिताश्री जी के चौथे वर्षीतप की सम्पन्नता पर मन प्रमुदित एवं पुलकित है। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने तेरापंथ के टॉप सेलिब्रेटी कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुति दी। साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी एवं साध्वी मुदिताश्रीजी ने भगवान ऋषभ के जीवन वृत्त की प्रस्तुति देते हुए साध्वी अणिमाश्रीजी के वर्ग की प्रमोदभावना का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, कल्याण परिषद के संयोजक के.सी. जैन, महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़ आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। मीडिया प्रभारी महेन्द्र चोरड़िया ने बताया कि कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। तपस्वियों के पारिवारिक सदस्यों ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा तप की अनुमोदना की।

गुलाब बाड़ी

'शासनश्री' साध्वी धनश्रीजी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम तेरापंथ भवन गुलाबबाड़ी में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में मनाया गया। साध्वीश्री ने फरमाया- तीर्थंकर परम्परा में भगवान ऋषभ सर्वोत्कृष्ट और सुदीर्घ तपस्वी बने। भगवान ऋषभ एक वर्ष तक अन्न और जल के बिना रहे। तपस्या का अपना महत्व है, तपस्या एक औषधि है, इससे कर्मों का निर्जरण होता है। अनेक दृष्टांतों द्वारा तपस्या का महत्त्व बताते हुए 'शासनश्री' ने दोनों तपस्वी साध्वियों के प्रति मंगल भावना व्यक्त करते हुए उन्हें तपस्या में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। साध्वी शीलयशाजी के प्रथम वर्षीतप और साध्वी सलिलयशाजी के एकासन का प्रथम वर्षीतप पूर्ण हुआ।

इस अवसर पर मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा किया गया। साध्वी शीलयशाजी एवं साध्वी विदितप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किये। लालचंद दुगड़, कनक दुगड़, चेतन चोरड़िया, प्रेमबाई मेहता आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। पारिवारिक जनों ने अपनी मंगल भावना भाषण, गीत आदि के द्वारा व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सलिलयशा द्वारा किया गया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस पर विशेष आयोजन

जयपुर

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 15वें महाप्रयाण दिवस पर आयोजन 'शासन गौरव' साध्वीश्री कनकश्रीजी के सान्निध्य में प्रज्ञापुरुष आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 15वां महाप्रयाण दिवस जप, तप, ध्यान और श्रद्धा समर्पण पूर्वक मनाया गया। महारानी फार्म के दिगम्बर जैन मन्दिर में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः' के सामूहिक जाप से हुई। सर्वप्रथम युवा सदस्यों सौरभ जैन, प्रवीण जैन, अंकित जैन आदि ने मधुर भक्ति गीत से प्रज्ञापुरुष को विनयांजलि समर्पित की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी कनकश्रीजी ने कहा- आचार्य श्री महाप्रज्ञजी विश्व की महानतम आध्यात्मिक विभूतियों में अग्रणी थे। उन्होंने मानवीय समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया तथा मौलिक समाधान प्रस्तुत किए। उन्होंने आध्यात्मिक चिंतन एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा विश्व को नई दृष्टि प्रदान की। प्रज्ञापुरुष के प्रेरक संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए साध्वीश्री ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ऐसे विलक्षण अध्यात्म गुरु थे जिन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और आगम संपादन जैसे महान अवदानों से समग्र विश्व को उपकृत किया है। प्रतिदिन महाप्रज्ञ वाङ्मय का स्वाध्याय व प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करें तो जीवन उन्नत बन सकता है। साध्वीश्री द्वारा रचित गीत 'महाप्रज्ञ आनंद लोक के वासी' की प्रस्तुति साध्वीवृंद ने की। साध्वी मधुलताजी ने अपने वक्तव्य द्वारा आचार्यश्री के बहुआयामी व्यक्तित्व और कर्तृत्व को उजागर किया। साध्वी मधुलेखाजी ने भी अपने भावसुमन अर्पित किये। श्री जैन श्वेताम्बर पद्मावती पोरवाल संघ समिति सवाई माधोपुर के मंत्री मुकेश पोरवार ने आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल की बहनों ने भावपूर्ण गीत द्वारा श्रद्धा समर्पित की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी संस्कृति प्रभाजी ने किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम के दौरान साध्वी मधुलताजी द्वारा प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग कराए गए तथा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के विलक्षण व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द विचारों का आदान प्रदान हुआ।

मुनि निर्मल कुमारजी के प्रति दो छंद

● मुनि कमल कुमार ●

राजगढ़ के राजगढ़ में दीक्षित निर्मल संत,
तुलसी महाप्रज्ञवत महाश्रमण की कृपा अनंत।
महाश्रमण की कृपा अनंत, विजय राज मुनि के सहयोगी।
लंबे समय घोर वेदना समता से भोगी।
कांति मुनि की सेवा चर्या बना अनोखा ग्रंथ।
राजगढ़ के राजगढ़ में दीक्षित निर्मल संत।।

सरल स्वभावी साताकारी हलुकर्मी अणगार,
सेवा की व सेवा पाई दोनों एकाकार।
दोनों एकाकार कांति मुनि की हिम्मत भारी।
केन्द्र व्यवस्थापक कुशल मुनि रणजीत कुमार,
सेवाभावी साताकारी हलुकर्मी अणगार।
निर्मल मुनि की गौरव गाथा गाता कमल कुमार ।।

गुरु मुख दर्शन है भाव विशुद्धि का निमित्त : आचार्यश्री महाश्रमण

एकलारा।
03 जून, 2024

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 14 किमी का विहार कर एकलारा के विवेकानन्द विद्यालय में पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए ने फरमाया कि चौरासी लाख जीव योनियां बताई गई हैं, उनमें जो मनुष्य जन्म है, यह दुर्लभ है। लम्बे काल तक भी कई प्राणियों को यह उपलब्ध नहीं होता है। कर्मों के विपाक से यह दुर्लभ मनुष्य जन्म हमें अभी उपलब्ध है। यह समय जो हमें प्राप्त है, इसे हमें प्रमाद में खोना नहीं चाहिए। मूर्छा में सोये नहीं रहना चाहिए।

इस मनुष्य जन्म को सफल, सुफल करने के लिए हमें भगवद् भक्ति करनी चाहिए। जिनेश्वर देव का नाम स्मरण बहुत महत्वपूर्ण है। नमस्कार महामंत्र का जप-स्मरण करें। अच्छे शब्द मुख पर आने से मन में अच्छे भाव भी उभर सकते हैं। भक्ति से मनुष्य जन्म सफल हो सकता है। धर्माचार्य - ज्ञान देने वाले गुरु की पर्युपासना करें। गुरु-मुख दर्शन भी भाव शुद्धि का निमित्त बन सकता है।

तीसरी बात है - प्राणियों के प्रति अनुकम्पा-अहिंसा की भावना। राग-द्वेष से किसी की हिंसा न करें, हो सके तो किसी को चित्त समाधि पहुंचाए, धर्म

का प्रतिबोध दें। परोपकार करना पुण्य निष्पन्न करने वाला है। दूसरों को पीड़ा पहुंचाना पाप को पैदा करने वाला है। चौथी बात- सुपात्र दान देना। शुद्ध साधु को दान देना। भावना यह रहे कि- मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय। दान देने से कई लाभ हो सकते हैं, वितरण निष्फल नहीं जाता। साधु को तो दान देना धर्म की बात बताया गया है।

पांचवीं बात- गुणों के प्रति अनुराग। गुणों के प्रति प्रमोद भावना रखो। आगम-ग्रंथों की वाणी गुरुओं से सुनो। सुनते-सुनते आदमी में विरक्ति का भाव पैदा हो सकता है, सद्गुणों का विकास हो सकता है। अच्छा देखें, अच्छा सुनें, अच्छा बोलें, अच्छा सोचें, अच्छा करें। भगवद भक्ति, गुरु पर्युपासना, सत्वानुकम्पा, सुपात्र दान, गुणानुराग - ये पांच कार्य करने से हमारा मानव जीवन सफल-सुफल हो सकता है।

इंसान बनना बहुत बड़ी बात है। मोक्ष जाने के लिए देवों को भी मानव जीवन लेना पड़ता है। समय बीत रहा है, हम प्रमाद से बचें। अगला जन्म दुर्गति में ना चला जाए। धर्म, सदाचार, सद्विचार के साथ जीवन जिएं। बच्चों को भी अच्छा मार्ग दर्शन मिलता रहे जिससे वे भी अच्छा जीवन जी सकें। जीवन में अहिंसा, नैतिकता, नशामुक्ति और संयम रहे। विद्यार्थी जीवन में ज्ञान और अच्छे संस्कारों का अर्जन तथा बुरी चीजों विसर्जन हो। विद्यालय में विवेक और आनन्द का विकास होता रहे। सन्यास मिलना तो बड़े भाग्य की बात है। हम मानव जीवन को सफल, सुफल बनाने का प्रयास करें।

दूसरों को कष्ट नहीं आध्यात्मिक हित पहुंचाने का करें प्रयास: आचार्यश्री महाश्रमण

बुलढ़ाणा।
06 जून, 2024

तेरापंथ के महामहिम धर्म दिवाकर आचार्यश्री महाश्रमणजी का भव्य जुलूस के साथ बुलढ़ाणा पदार्पण हुआ। परम पावन ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी ही नहीं संसार के सभी प्राणी जीवन जीते हैं। जीवन जीना सामान्य बात है। आयुष्य कर्म के सहयोग से जीवन जिया जा रहा है। धार्मिक तरीके से जीवन जीना विशेष बात हो जाती है। मानव जीवन को शास्त्र में दुर्लभ बताया गया है, जो हमें वर्तमान में उपलब्ध है। मानव जीवन में जो उत्कृष्ट साधना की जा सकती है वह अन्य जीवन में नहीं की जा सकती। धर्म की कला सीखे सकें तो बड़ी बात है। कहा गया है कि बहत्तर कला में पंड़ित बनने पर भी वे अपंडित रह जाते हैं, यदि वे सर्वक्षेष्ठ धर्म कला को नहीं जानते।

सभी कलाएं हैं विकलाएं, पंडित सभी अपंडित हैं।
नहीं जानते कैसे जीना, केवल

महिमा मंडित है।।

प्रश्न है कि आदमी धर्म की कला कैसे सीखें? जीवन विज्ञान से विद्यार्थी जीने की कला सीख सकते है। श्वास कैसे लेना, भोजन कैसे करना आदि अनेक कलाएं हो सकती है। जीवन में ईमानदारी रखने का प्रयास हो, झूठ और चोरी से विरत रहें। गृहस्थ जीवन में भी यथासंभव साधना का करने का प्रयास किया जाए। 'सांच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप। जाके हिरदै सांच है, ता हिरदै प्रभु आप।।'

सच्चाई में कठिनाईयां आ सकती है, पर अंतिम विजय सच्चाई की होती है।

अहिंसा का भी यथा संभव प्रयास करें। दूसरों को पीड़ा नहीं पहुंचाएं, हो सके तो आध्यात्मिक हित करने का प्रयास करें। अहिंसा परम धर्म है। षट् जीव निकाय तो संसार में अनंत-अनंत है। सब प्राणियों के साथ मैत्री की भावना रहे, सब के प्रति सद्भावना रहे। दुःख हिंसा, झूठ, चोरी से पैदा होते हैं। जीवन में संयम रहे, धर्म की साधना में समय लगाएं तो यह जीवन भी और परलोक भी अच्छा रह सकता है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिन बच्चों का सम्पर्क अच्छे लोगों से होता है उनमें अच्छे संस्कार आ सकते हैं। व्यक्ति को जैसा वातावरण मिलता है, व्यक्ति वैसा हो जाता है। ज्ञानी पुरुषों की संगत से हमारी ज्ञान चेतना जागृत होती है। आचार्य प्रवर के प्रवचन से ज्ञान की रश्मियां उपलब्ध होती है। अच्छा जीवन जीने के लिए महापुरुषों की सन्निधि में रहना अपेक्षित है। पूज्यप्रवर के स्वागत में एडिशनल कलेक्टर निर्भय जैन, बुलढ़ाणा अर्बन प्रमुख राधेश्याम चांडक, निशा सांखला, महाराष्ट्र केमिस्ट एसोसिएशन के सचिव अनिल नावदार, पुलिस महानिर्देशक सुनील कडासले, श्री संघ बुलढ़ाणा के राजेश देसरला, डॉ. उमेश सांखला एवं प्रकाशचंद चोरड़िया ने अपने उद्गार व्यक्त किए। शिवानी एवं खुशी सांखला, सांखला परिवार, स्वर साधना मंडल, स्वर्ण गीत मंडल ने पृथक-पृथक गीत का संगान कर अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कर्मों के वेदन और निर्जरण से ही मिल सकता है छुटकारा: आचार्यश्री महाश्रमण

चिखली।
04 जून, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि संसार को अर्णव कहा गया है। संसार सागर है, भवसागर है। इसमें जीव जन्म-मृत्यु करते रहते हैं, जब तक मोक्ष नहीं हो जाता। प्रश्न है कि इस संसार अर्णव को कैसे पार किया जाए ? संसार सागर को पार करने के लिए निश्छिद्र नौका हो तो पार पहुंचा जा सकता है। वह नौका ये शरीर है। इस शरीर को धर्म संयमी शरीर बना ले आत्मा संयम तप को धारण कर ले। संवर और निर्जरा के द्वारा भव सागर को तरा जा सकता है।

शरीर अनुकूल रहे तो ही साधना हो सकती है। शास्त्रकार ने कहा है - जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, व्याधि-बीमारी न बढ़े और इन्द्रियां बलवान और सक्षम रहे तो शरीर सक्षम रह सकता है तब तक धर्म की साधना हो सकती है।

जीव को किए हुए कर्म भोगने होते हैं। किस-किस गति में जा सकता है। कर्मों को वेदने से या तपस्या से निर्जरण करने से ही छुटकारा हो सकता है। संत लोग जगह-जगह जाते हैं, तो लोगों का कल्याण हो सकता है, त्याग-संयम करने की प्रेरणा मिलती है। साधना करते-करते हमारी मोक्ष से निकटता हो सकती है।

शरीर से साधना कर भवसागर से तरना है। सन्यासी तो कोई भाग्यशाली ही बन सकता है, उसे भी अंतिम सांस तक निभा देना और विशेष बात है। गृहस्थ जीवन में भी जितना तप-संयम का आराधन हो सके करने का प्रयास करना चाहिये। जीवन में अहिंसा, ईमानदारी, संयम और अनासक्ति रहे। गृहस्थ भी भव-सागर तरने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। पूज्यवर के स्वागत में भारतीय जैन संगठना बुलढ़ाणा के अध्यक्ष अमित बेंगानी, निकिता कोठारी एवं अरुणा कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय जैन महिला मंडल गीत, बेंगानी परिवार की बहु-बेटियों ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अर्हम्

मुनि निर्मल कुमार जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म स्थान	:	राजगढ़ (राजस्थान प्रान्त, बीकानेर संभाग)
जन्म तिथि	:	वि.सं. 2009, कार्तिक कृष्णा 13
पिता का नाम	:	श्री रायचंद गधैया
माता का नाम	:	श्रीमती गिन्नी देवी गधैया
दीक्षा	:	26 वर्ष की अविवाहित वय में संवत् 2035, फाल्गुन कृष्णा 13
दीक्षा प्रदाता	:	परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी
स्थान	:	राजगढ़
कंठस्थ ज्ञान	:	पच्चीस बोल, पाना की चर्चा, कालूतत्व शतक। दशवैकालिक (४ अध्ययन), भक्तामर, चौबीसी, आचारबोध, संस्कारबोध, व्यवहारबोध और कई मुक्तक, गीतिका आदि।
देवलोक गमन	:	31 मई 2024, जैन विश्व भारती, लाडनूं।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**